ऋण निर्देश

इस लघु शोध -प्रबंध की पूर्ति में मेरी सहायता करनेवाले तथा प्रोत्साहित करनेवाले हितचिंतकों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करना मैं अपना परम कर्तव्य समझती हूँ। प्रस्तुत शोधकार्य मैंने श्रध्देय गुरूवर्य डॉ. के.पी.शहाजी के निर्देशन में पूर्ण किया है। अपनी कार्य व्यस्तता के बावजूद भी आप ने सम्य -समय पर अमूल्य निर्देशों के द्वारा विषय के अध्ययन में मुझे गति और उत्साह दिया। इसलिए मैं आपकी कृतज्ञ एवं ऋणी हूँ।

हिन्दी विभाग के अध्यक्ष आदरणीय गुरुवर्य डॉ.अर्जुन चव्हाण जी, आदरणीय डॉ.पांडुरंग एस.पाटील जी , डॉ. वसंत मोरे जी, डॉ.सुनीलकुमार लवटे जी इन सभी का सहयोग तथा आशीर्वाद मेरे साथ रहा है।

मेरे आदरणीय पूज्य पिताजी श्री. लक्ष्मण गोपाळ चौगुले और माताजी श्रीमती सुमन लक्ष्मण चौगुले के आशीर्वाद का फल है, कि मैं अपने कार्य की पुर्ति में सफल हुअी हूँ। आज मैं जो कुछ भी हूँ उन्ही की बदौलत हूँ।

अत : उनका आभार मानकर मैं उनके ऋण से मुक्त नहीं होना चाहती क्योंकि ऋण तो गैरों का चूकाया जाता है,अपनों का नहीं। साथ ही मेरी नानी,बहन यशश्री, भाई विवेक और सागर, मामा श्री. आण्णासाहेब पाटील जिनके प्रोत्साहन और प्रेरणा के कारण आज मैंने अपना कार्य सफलतापूर्वक पूरा किया हैं, उनकी मैं हमेशा के लिए ऋणी हूँ।

विशेष रुप से मैं ऋणी हूँ प्रा.सुधीर इंगळे, श्रीमती सुमित्रा इंगळे और श्री. इ. एन. पोवार जी की जिनके आशीर्वाद के बिना यह कार्य असंभव था। मैं उनकी हमेशा ऋणी रहुंगी ।मेरे सहपाठी, ,सहेलियाँ और कई हितचिंतकों की शुभकामनाएँ मेरे साथ रही, उनको भी मैं धन्यवाद देती हूँ।

शिवाजी विश्वविद्यालय के ग्रंथालय से मुझे अनेक ग्रंथों का लाभ हुआ। ग्रंथालय के पदाधिकारी तथा ग्रंथालय में कार्य करनेवाले लोगों ने मेरी सहायता की इसलिए मैं उनका भी आभार प्रकट करती हूँ। उन ग्रंथकार,लेखकों का आभार प्रकट करना अपना दायित्व समझती हूँ , जिनके ग्रंथों से मैं लाभान्वित हुई हूँ।

प्रस्तुत शोधकार्य का टकंलेखन सुचारु रूप से करनेवाले श्री.नरेंद्र वसंतराव गायकवाड जी की भी मैं आभारी हूँ।अंत में विनम्रता के साथ मैं अपना लघु शोध -प्रबंध विद्वानों के सामने परीक्षणार्थ प्रस्तुत करती हूँ।

स्थान : कोल्हापुर।

तिथि : 28/12/2001

शोध छात्रा

(कु.जयश्री लक्ष्मण चौगुले)